एक बार , एक गरीब लकड़हारा अपनी पत्नी के साथ रहता था । उनकी कोई औलाद नहीं थी । एक दिन उसने अपनी पत्नी से कहा - “ काश ! हमारा एक बेटा होता । चाहे वह एक अंगूठे जितना ही लम्बा होता । ” भगवान ने उसकी सुन ली । उसका एक बेटा हुआ परंतु वह अंगूठे के बराबर ही था । उन्होंने उसका नाम अंगूठा ही रख दिया । अंगूठा बड़ा होकर एक चतुर लड़का बना परंतु उसकी लम्बाई नहीं बढ़ी । उसके पिता एक घोड़ा गाड़ी भी चलाते थे । अंगूठा घोड़े के कान के पास बैठकर उसे रास्ता बताता था । एक सर्कस के मालिक ने अंगूठे को देखा तो वह उसे खरीदने के लिए आया । खुद को बेचने के लिए , अंगूठे ने अपने माता-पिता को राजी कर लिया । वह जानता था उन्हें पैसे की ज़रूरत थी । उसने कहा - “ आप घबराओ नहीं , मैं जल्द ही वापस आ जाऊँगा ।